नवभारत इंदौर

इलाज से रोका जा सकता है आरएच असंगतता को

गर्भावस्था के दौरान इंदौर. दुर्लभ आरएच नेगेटिव ब्लड टाइप से पीड़ित महिलाओं को आरएच असंगता होने से उत्पन्न गर्भावस्था संबंधी समस्याओं का सामना करने का ज्यादा खतरा होता है। आरएच असंगता एक असामान्य लेकिन खतरनाक ब्लड ग्रुप संबंधी डिसऑर्डर है जो भ्रूण के स्वास्थ्य के लिए खतरनाक

प्रसव पूर्व जांच अवश्य कराएं

होता है। अगर इस स्थिति का इलाज न किया जाए तो आरएच असंगतता गर्भधारण के परिणामस्वरूप नवजात शिशु में गर्भावस्था का नुकसान, भ्रूण में खून की कमी, गंभीर पीलिया और यहां तक कि नवजात बच्चे में न्यूरोलॉजिकल समस्याएं भी पैदा कर सकता है।

आरएच असंगतता की स्थिति तब उत्पन्न होती है जब आरएच नेगेटिव ब्लड ग्रुप वाली महिला आरएच पॉजिटिव बच्चे को गर्भ में धारण करती है।आरएच फैक्टर या तैमेने फैक्टर आनुवंशिक रूप से जन्मजात प्रोटीन होती है जो लाल रक्त कोशिकाओं की सतह पर पाया जाता है। जिन लोगों को यह प्रोटीन जन्म से मिला होता है वे आरएच पॉजिटिव होते हैं. मतलब उनमे ब्लड ग्रुप ! ए प्लस, बी प्लस और ओ प्लस होता है। जबकि जिनमें यह प्रोटीन नहीं होता है वे आरएच नेगेटिव होते हैं, इसका मतलब यह है कि उनके ब्लड ग्रुप ए माइनस, बी माइनस और ओ माइनस (निगेटिव) होंगे।

मदरहुड हॉस्पिटल, इंदौर के साझेदारी में चलने वाले आशा बक्शी फर्टिलिटी सेक्टर की मुख्य कंसल्टेंट डॉ. आशा बक्शी ने कहा कि भारतीय महिलाओं में आरएच नेगेटिव ब्लड ग्रुप लगभग 2 से 10फीसद महिलाओं है और 60फीसद तक आरएच नेगेटिव महिलाओं में ते

पॉजिटिव बच्चे होते है। यह एक ऐसी स्थिति होती है जिसे ते असंगतता या कहा जाता है। डॉ. बक्शी ने और ज्यादा इस समस्या पर प्रकाश डालते हुए कहा-वैसे तो आरएच फैक्टर किसी भी व्यक्ति को प्रभावित नहीं करता है, लेकिन नेगेटिव आरएच फैक्टर गर्भावस्था पर प्रमुख रूप से असर डाल सकता है। जब एक आरएच नेगेटिव महिला एक ते पॉजिटिव बच्चे को गर्भ में धारण करती है, तो मां का शरीर भ्रूण को कोई बाहरी वस्तु की तरह महसूस कर सकता है और इसके खिलाफ एंटीबॉडी विकसित कर सकता है। इससे पहली गर्भावस्था में कोई समस्या नहीं होती है, लेकिन बाद के गर्भधारण में आरएच एंटीबॉडीज माँ का खून तब प्लेसेंटा को पार कर सकता है और भ्रूण की रक्त कोशिकाओं पर आरएच फैक्टर पर हमला कर सकता है। ये एंटीबॉडी भ्रूण की रक्त कोशिकाओं को नष्ट कर सकते हैं और भ्रूण के स्वास्थ्य पर कई संभावित विनाशकारी प्रभाव डाल सकते हैं। यही कारण है कि सभी गर्भवती महिलाओं को हॉस्पिटल में अपनी पहली प्रसवपूर्व विजिट में ही आरएच ब्लड टाइप की जांच करानी चाहिए। मां का इम्यून रिसपॉंस (प्रतिरक्षा प्रक्रिया) अक्सर भ्रूण के आरबीसी को नष्ट कर देता है जिससे भ्रूण में एनीमिया हो जाता है। कुछ केसेस में इससे हाइड्रोप्सफेटलिस (भ्रूण में अत्यधिक द्रव का इकट्ठा हो जाना और एडिमा) भ्रूण में हार्ट का फेल होना या यहां तक कि गर्भाशय में ही भ्रूण की मौत या पैदा होते ही बच्चे की मौत हो सकती है। आरएच की समस्या होने से बच्चे में एनीमिया हो सकता है जिससे नवजात शिशु में गंभीर पीलिया भी हो सकता है।

दरअसल इस तरह की समस्याओं से पीड़ित बच्चों में हाइपर बिलुरुब की घटना 76.2 प्रतिशत तक होती है और इसके परिणामस्वरूप कर्निकटेरस और न्यूरोलॉजिकल समस्या हो सकती है। आरएच की समस्य होने से गर्भधारण में नवजात शिशु में गर्भावस्था के नुकसान और गंभीर स्वास्थ्य समस्याओं का ज्यादा खतरा होता है इससे बच्चे के जन्म पर मरने का खतरा 11 प्रतिशत होता है, जबकि 13 प्रतिशत प्रभावित नवजात शिशुओं में कर्निकटेरस विकसित हो सकता है।